संपादकीय

टीजी मोहनदास से संघ और भाजपा ने बनाई दूरी?

जेन-जी ओर काकरोंच जनता पार्टी के युवाओं द्वारा जंतर मंतर में एक बड़ा प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन को लेकर केरल के संघ विचारक टीजी मोहनदास ने छात्र आंदोलन पर बड़ी विवादित टिप्पणी की है। उन्होंने यूट्यूब चैनल में मलयाली भाषा में जो वीडियो अपलोड किया है, उसमें कहा गया है, आंदोलन रोकने की जिम्मेदारी उनके पास होती तो वह प्रदर्शनकारियों को हटाने के लिए जंतर मंतर इलाके में कर्फ्यू लगा देते। उन्होंने कहा, जंतर मंतर के चार किलोमीटर क्षेत्र में कर्फ्यू लगाकर तीन बार प्रदर्शनकारियों को वहां से हटने की चेतावनी देते। यदि वह नहीं मानते, तो उसके बाद मैं गोली चलाने का आदेश देता। इस आदेश के बाद प्रदर्शनकारी भाग जाते। गोलीबारी में कुछ लोग मर जाते, कुछ लोग बच जाते, कुछ अपंग हो जाते। इसके बाद प्रदर्शनकारी दोबारा कभी आंदोलन करने की नहीं सोचते। उन्होंने यूट्यूब चैनल में कहा, जो लड़कियां प्रदर्शन में शामिल थी। उनके बारे में भी बड़ी अनाप-शनाप अशोभनीय टिप्पणी की है। जिसकी सारे देश में चर्चा और उसकी निंदा हो रही है। संघ और भाजपा के लोग कुछ ऐसी बात बोल देते हैं, जिससे संगठन की परेशानी बढ़ती है। जिस तरह से मोहन दास ने गोली चलाने और प्रदर्शन में शामिल लड़कियों और महिलाओं के बारे में जो कुछ बोला है। उसको लेकर देश में बड़ा बवाल बन गया है। केरल सरकार के गृहमंत्री रमेश चैनिथल्ला ने इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित खबर के बाद वीडियो की जांच के आदेश दे दिए हैं। वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा ने मोहनदास से पल्ला झाड़ लिया है। संघ की ओर से पीटीआई ने जो बयान जारी किया है, उसमें कहा गया है, मोहनदास आरएसएस के पदाधिकारी नहीं है। संघ उनके विचारों से सहमत नहीं है। जो विचार उन्होंने व्यक्त किए हैं, वह उनके निजी बयान है। वहीं दूसरे पक्ष का कहना है, टीजी मोहनदास भाजपा संगठन में राज्य स्तर के प्रमुख पद में रहे हैं। वर्तमान में उनके पास कोई दायित्व नहीं है। उनकी विचारधारा पूरी तरह से संघ की है, वह संघ के महत्वपूर्ण पदों में कई दशक रह चुके हैं।

केरल में गठबंधन की सरकार है। कांग्रेस ने उनके बयान को घटिया और महिला विरोधी सोच बताया है। कांग्रेस ने आरोप लगाया है, संघ अपना पंजीयन इसलिए नहीं कराता है। वह इस तरह के अपराध होने पर जिम्मेदारी कभी नहीं लेता है। महात्मा गांधी की जब हत्या हुई थी, उस समय भी संघ ने नाथूराम गोडसे से अपना पल्ला इसी तरह से झाड़ लिया था। कांग्रेस ने मोहनदास के बयान की आलोचना करते हुए कहा, देश को नफरत और हिंसा की आग में झोंकने का इतिहास संघ का है। कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन में सारे देश के युवा सड़कों पर प्रदर्शन के लिए उतरे थे। अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावा और दान चोरी को लेकर संघ और भाजपा राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे समय पर पार्टी के अंदर से जिम्मेदार लोग जो बयानबाजी कर रहे हैं, उससे संघ और भाजपा को राजनीतिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। मोहनदास ने स्वीकार किया है, वीडियो उन्हीं के द्वारा डाला गया है। उनका कहना है कि उसको गलत ढंग से ट्रांसलेट किया गया है। उनकी वह मनसा नहीं थी, जो बताई जा रही है। बहरहाल केरल सरकार ने जांच के आदेश दे दिए हैं। निश्चित रूप से उनके ऊपर कानूनी कार्रवाई तो होगी। संघ ने अपना पल्ला झाड़ लिया है। ऐसी स्थिति में आने वाले समय पर टीजी मोहनदास की परेशानी बढ़ने वाली हैं। इसका असर संघ और भाजपा पर भी पड़ना तय है। कुछ महीने बाद उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों के चुनाव होने हैं। बेरोजगारी, ई-20 पेट्रोल, महंगाई, पेपर लीक जैसी घटनाओं के कारण युवा वर्ग सरकार से नाराज है। वह आंदोलन के लिए सड़कों पर आकर प्रदर्शन कर रहा है। ऐसी स्थिति में इस बयान के कारण संघ और भाजपा को भविष्य में बड़ा नुकसान भी हो सकता है। संघ इसकी भरपाई करने के लिए अब कौन से उपाय करेगा, यह देखना अभी बाकी है।

राहुल गांधी की राजनीति में शब्दों की सीमा और आरोपों की जिम्मेदारी

भारतीय राजनीति में राहुल गांधी का सफर लगातार बदलाव के दौर से गुजरता दिखाई देता है। कभी पारिवारिक विरासत के सहारे राजनीति में आए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान नेता प्रतिपक्ष अब स्वयं अपनी राजनीतिक पहचान बनाने की कोशिश करते नजर आते हैं। उत्तर प्रदेश के अमेठी से लेकर रायबरेली और हिंदी पट्टी के दूसरे हिस्सों तक उनकी सक्रियता यह संकेत देती रही है कि वे कांग्रेस की पुरानी जमीन को फिर से मजबूत करना चाहते हैं। लेकिन राजनीतिक संघर्ष केवल यात्राओं, रोड शो और जनता से संवाद तक सीमित नहीं होता। संसद के भीतर इस्तेमाल किए गए शब्द और लगाए गए आरोप भी किसी नेता की राजनीतिक छवि को उतना ही प्रभावित करते हैं। राहुल गांधी के सामने इस समय सबसे बड़ी चुनौती यही दिखाई देती है कि वे अपने राजनीतिक आक्रामक तेवर और संसदीय मर्यादा के बीच संतुलन कैसे स्थापित करते हैं।

राहुल गांधी की राजनीति की सबसे बड़ी विशेषता उनकी स्वतःस्फूर्तता मानी जाती है। वे अक्सर तैयार भाषण से हटकर अपने मन की बात कह देते हैं। यही अंदाज कभी उन्हें जनता से जोड़ता है तो कभी विवादों में भी ले जाता है। संसद में पेपर लीक और परीक्षा व्यवस्था पर चर्चा के दौरान उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए कुछ शब्दों को लेकर सत्ता पक्ष ने जिस तरह आपत्ति जताई, उसने एक बार फिर यह सवाल खड़ा किया कि विपक्ष के नेता को सरकार पर हमला करते समय भाषा की सीमा कितनी सावधानी से तय करनी चाहिए।

पेपर लीक का मुद्दा निश्चित रूप से देश के लाखों छात्रों और उनके परिवारों से जुड़ा गंभीर विषय है। प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितता, प्रश्नपत्र लीक होने की शिकायतें और परीक्षा प्रक्रिया पर उठते सवाल युवाओं के भविष्य से सीधे जुड़े हुए हैं। ऐसे मुद्दे पर संसद में सरकार से जवाब मांगना विपक्ष का अधिकार ही नहीं बल्कि लोकतांत्रिक जिम्मेदारी भी है।

राहुल गांधी ने इसी संदर्भ में परीक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि पूरी प्रक्रिया में निजी कंपनियों की भूमिका बढ़ रही है और परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के लिए परेशानी का कारण बनती जा रही है। उन्होंने पेपर लीक के लिए बड़ी रकम के लेन-देन का भी आरोप लगाया और शिक्षा मंत्रालय की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए।

लेकिन गंभीर विषय उठाने और गंभीर आरोप लगाने के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर होता है। आरोप यदि तथ्य और प्रमाण के साथ लगाए जाएं तो वे सरकार को जवाब देने के लिए मजबूर कर सकते हैं। लेकिन वही आरोप जब राजनीतिक भाषा और व्यक्तिगत टिप्पणियों के साथ सामने आते हैं तो मूल मुद्दा पीछे छूट सकता है। संसद में राहुल गांधी के बयान के दौरान यही स्थिति देखने को मिली। उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए 'इडियट' जैसे शब्दों पर सत्ता पक्ष ने आपत्ति जताई। संसदीय कार्य मंत्री ने इसे असंसदीय बताते हुए कार्यवाही से हटाने की मांग की और लोकसभा अध्यक्ष ने भी सदन की मर्यादा बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया।

यहां सवाल केवल एक शब्द का नहीं है। सवाल यह है कि क्या संसद में राजनीतिक असहमति व्यक्त करने के लिए ऐसी भाषा आवश्यक है। लोकतंत्र में तीखी आलोचना की पूरी गुंजाइश है। सरकार की नीतियों पर सवाल उठाए जा सकते हैं। मंत्री की कार्यशैली पर सवाल किया जा सकता है। प्रधानमंत्री और गृह मंत्री सहित किसी भी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति से जवाब मांगा जा सकता है। लेकिन व्यक्तिगत टिप्पणी और अपमानजनक शब्द लोकतांत्रिक बहस को कमजोर ही करते हैं।

राहुल गांधी के लिए यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे अब केवल कांग्रेस के एक सामान्य सांसद नहीं हैं। वे लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं। इस पद के साथ राजनीतिक अधिकारों के साथ एक अतिरिक्त जिम्मेदारी भी जुड़ी है। देश के करोड़ों लोग संसद की कार्यवाही देखते हैं और विपक्ष के नेता की बात को सामान्य राजनीतिक बयान से अधिक गंभीरता से लिया जाता है। इसलिए राहुल गांधी की भाषा का प्रभाव भी व्यापक होता है।

सत्ता पक्ष ने राहुल गांधी के बयानों को लेकर जिस तरह हमला किया, उसमें राजनीति का स्वाभाविक तत्व भी दिखाई देता है। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने विपक्ष के नेता की भाषा को अनुचित बताया और कहा कि देश के युवाओं के लिए ऐसी भाषा का इस्तेमाल दुर्भाग्यपूर्ण है। भाजपा की ओर से यह आरोप भी लगाया गया कि राहुल गांधी बिना पर्याप्त प्रमाण के गंभीर आरोप लगाकर केवल राजनीतिक सुर्खियां बटोरना चाहते हैं। सत्ता पक्ष के नेताओं का तर्क है कि पेपर लीक का मुद्दा पहले ही सरकार और विपक्ष के बीच बहस का विषय रहा है तथा अब राजनीतिक श्रेय लेने की कोशिश की जा रही है।

लेकिन सरकार को भी यह समझना होगा कि विपक्ष के सवालों को केवल राजनीतिक अवसरवाद कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। यदि छात्रों के मन में परीक्षा व्यवस्था को लेकर अविश्वास है तो सरकार की जिम्मेदारी है कि वह पारदर्शी तरीके से जवाब दे। कितने पेपर लीक हुए, जांच कहां तक पहुंची, दोषियों के खिलाफ क्या कार्रवाई हुई और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए क्या व्यवस्था बनाई जा रही है, इन सवालों के स्पष्ट उत्तर जनता को मिलने चाहिए। केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि विपक्ष मुद्दे को राजनीतिक रंग दे रहा है।

इसी तरह राहुल गांधी को भी यह समझना होगा कि आरोप लगाना आसान है लेकिन आरोप को प्रमाणित करना कठिन। खासकर जब बात गृह मंत्री जैसे वरिष्ठ संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति के खिलाफ हो। राहुल गांधी की ओर से गोली या पैलेट गन चलाने के आदेश जैसे गंभीर आरोप लगाए गए हैं। ऐसे आरोपों के लिए ठोस प्रमाण अपेक्षित हैं। संसद में किसी व्यक्ति पर गंभीर आरोप लगाने के बाद उससे जुड़े तथ्य सामने रखना विपक्ष के नेता की जिम्मेदारी भी है। यदि प्रमाण नहीं हैं तो आरोप राजनीतिक बहस को तो गर्म कर सकते हैं लेकिन उनकी विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

राजनीति में राहुल गांधी की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे अपनी स्वतःस्फूर्त शैली को बनाए रखते हुए राजनीतिक और संसदीय जिम्मेदारी का संतुलन कायम करें। उनके समर्थक उनके बेबाक अंदाज को उनकी ताकत मानते हैं। उनका मानना है कि राहुल गांधी बिना किसी डर के सरकार से सवाल करते हैं और युवाओं, किसानों तथा आम लोगों के मुद्दों को संसद में उठाते हैं। दूसरी ओर उनके आलोचक कहते हैं कि वे कई बार जल्दबाजी में ऐसे बयान दे देते हैं जिन्हें बाद में सरकार और भाजपा उनके खिलाफ राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करती है।

दोनों पक्षों के बीच यह बहस भारतीय लोकतंत्र के लिए नई नहीं है। सत्ता पक्ष हमेशा विपक्ष के आरोपों में राजनीति देखता है और विपक्ष सरकार के जवाबों में बचाव। लेकिन लोकतंत्र की सफलता इसी में है कि आरोप और जवाब दोनों तथ्य आधारित हों। संसद राजनीतिक युद्ध का मैदान जरूर है लेकिन वह केवल नारेबाजी और व्यक्तिगत आरोपों का मंच नहीं हो सकती।

राहुल गांधी के सामने इसलिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक अवसर भी है। यदि वे पेपर लीक जैसे मुद्दों को लगातार तथ्य और प्रमाण के साथ उठाते हैं, छात्रों की समस्याओं को नीति के सवाल से जोड़ते हैं और सरकार से ठोस जवाब मांगते हैं तो उनकी भूमिका प्रभावी विपक्षी नेता के रूप में और मजबूत हो सकती है। लेकिन यदि गंभीर मुद्दों के बीच व्यक्तिगत टिप्पणियां और बिना प्रमाण के आरोप हावी हो गए तो बहस का केंद्र छात्रों की समस्या से हटकर राहुल गांधी की भाषा बन जाएगा। संसद में हाल की घटना इसी खतरे की ओर संकेत करती है।

कांग्रेस के लिए भी यह समय महत्वपूर्ण है। राहुल गांधी को केवल राजनीतिक रूप से आक्रामक नेता के रूप में नहीं बल्कि जिम्मेदार विपक्ष के चेहरे के रूप में स्थापित करने की जरूरत है। परिवार की विरासत राजनीति में शुरुआती पहचान दे सकती है लेकिन लंबे समय की राजनीतिक विश्वसनीयता केवल व्यक्तिगत प्रदर्शन से बनती है। जनता यह देखती है कि नेता क्या सवाल पूछता है, कैसे पूछता है और उसके सवालों के पीछे कितनी तैयारी है।

राहुल गांधी के राजनीतिक सफर में यह दौर निर्णायक हो सकता है। वे कांग्रेस की पुरानी जमीन वापस पाने की कोशिश कर रहे हैं और विपक्ष के नेता के रूप में राष्ट्रीय राजनीति में अपनी भूमिका बढ़ा रहे हैं। ऐसे समय में उनके शब्द ही उनकी सबसे बड़ी ताकत भी बन सकते हैं और सबसे बड़ी कमजोरी भी। संसद में सरकार को कठघरे में खड़ा करना उनका अधिकार है लेकिन संसद की गरिमा बनाए रखना उनकी जिम्मेदारी भी है।

लोकतंत्र में सरकार से सवाल पूछना जरूरी है और विपक्ष का मजबूत होना भी जरूरी है। लेकिन मजबूत विपक्ष वह नहीं जो सबसे ज्यादा शोर करे बल्कि वह है जो सबसे मजबूत तथ्य सामने रखे। राहुल गांधी यदि अपनी बेबाकी को तथ्य, प्रमाण और संसदीय मर्यादा के साथ जोड़ देते हैं तो उनकी राजनीति को नई विश्वसनीयता मिल सकती है। अन्यथा गंभीर मुद्दों के बीच एक असावधान शब्द पूरी बहस को भटका सकता है। यही राहुल गांधी की राजनीति की सबसे बड़ी परीक्षा है और शायद आने वाले समय में उनकी राजनीतिक पहचान भी इसी कसौटी पर तय होगी।

साहित्य के अमर शिल्पकार मुंशी प्रेमचंद और उनकी कालजयी विरासत

आज इकतीस जुलाई को हिंदी और उर्दू साहित्य के सबसे बड़े लेखक मुंशी प्रेमचंद की जयंती है। जब हम प्रेमचंद का नाम सुनते हैं तो हमारे दिमाग में एक ऐसे सीधे-साधे इंसान की तस्वीर उभरती है जिसने हमेशा आम जनता की बात की। उन्होंने राजा-रानियों और परियों की काल्पनिक कहानियों को छोड़कर समाज के सबसे गरीब और बेबस लोगों को अपनी लेखनी का हीरो बनाया। प्रेमचंद केवल कहानियां लिखने वाले लेखक नहीं थे बल्कि वे अपने समय से बहुत आगे की सोचने वाले एक सच्चे युग दृष्टा थे। उन्होंने समाज को देखने और समझने का एक नया नजरिया दिया। उनकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उन्होंने करीब सौ साल पहले जिन सामाजिक बुराइयों और इंसानी स्वभाव को पहचाना था वे सारी बातें आज भी हमारे समाज में सच साबित हो रही हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के जरिए एक ऐसी साहित्यिक विरासत हमारे बीच छोड़ी है जो हमेशा हमारा रास्ता रोशन करती रहेगी। प्रेमचंद के पूरे साहित्य की सबसे बड़ी ताकत उसकी सादगी और जमीन से जुड़ी सच्चाई थी। उन्होंने भारत के गांवों, वहां के किसानों और मेहनत करने वाले मजदूरों के दुख-दर्द को बहुत करीब से देखा और महसूस किया था। उनका साहित्य केवल समाज की कमियां नहीं गिनाता बल्कि हमें अंदर से झकझोर कर सोचने पर मजबूर कर देता है। उन्होंने गोदान, गबन और रंगभूमि जैसे महान उपन्यासों के जरिए उस समय के जमींदारों और सूदखोरों पर सीधा हमला किया जो गरीब जनता का खून चूस रहे थे। प्रेमचंद ने पैसों की भूख, जातिवाद, छुआछूत और महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव के खिलाफ अपनी कलम को सबसे बड़ा हथियार बनाया। उनकी दूरदर्शिता इसी बात से समझ आती है कि वे बहुत पहले जान गए थे कि जब तक हमारे देश का किसान खुशहाल नहीं होगा तब तक देश की तरक्की की बातें बिल्कुल अधूरी हैं। उनकी छोटी-छोटी कहानियों का असर इतना गहरा है कि वे सीधे पाठक के दिल में उतर जाती हैं। पूस की रात, कफन और ठाकुर का कुआं जैसी कहानियां मनोरंजन के लिए नहीं लिखी गई थीं बल्कि वे समाज का आईना थीं। कफन कहानी में भूख और तंगहाली के कारण संवेदनहीन हो चुके बाप-बेटे के जरिए उन्होंने दिखाया कि भयंकर गरीबी कैसे इंसान के भीतर की दया और ममता को मार देती है। वहीं ठाकुर का कुआं कहानी में उन्होंने जाति के नाम पर होने वाले उस भेदभाव को दिखाया जो आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप में दिखाई दे जाता है। प्रेमचंद ने इंसानी दिमाग और उसकी भावनाओं को इतनी गहराई से समझा था कि उनके बनाए किरदार वक्त के साथ पुराने नहीं हुए बल्कि आज भी हमारे आसपास जीते-जागते नजर आते हैं। अगर हम उनके साहित्यिक प्रभाव की बात करें तो प्रेमचंद ने अपने बाद आने वाले लेखकों की कई पीढ़ियों की सोच को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने साहित्य की भाषा को बड़े-बड़े विद्वानों के कमरों से निकालकर आम लोगों की बोलचाल की भाषा बनाया। उन्होंने हिंदी और उर्दू के शब्दों को मिलाकर एक बेहद सरल हिंदुस्तानी भाषा तैयार की जिसे पढ़ना और समझना हर किसी के लिए आसान था।

गुजरात का नया समुद्री सपना

भारत का समुद्री इतिहास सदियों पुराना रहा है। प्राचीन काल से ही गुजरात के बंदरगाह व्यापार और समुद्री गतिविधियों के प्रमुख केंद्र रहे हैं। लोथल जैसे ऐतिहासिक बंदरगाह इस बात के प्रमाण हैं कि गुजरात की पहचान समुद्र से जुड़ी रही है। आज जब भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब समुद्री क्षेत्र को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए जहाज निर्माण और जहाज मरम्मत उद्योग को विशेष महत्व दिया जा रहा है। इसी सोच के साथ गुजरात सरकार ने गुजरात शिपबिल्डिंग एवं शिप रिपेयर पॉलिसी-2026 लागू की है। यह केवल एक औद्योगिक नीति नहीं बल्कि राज्य को विश्वस्तरीय समुद्री विनिर्माण केंद्र बनाने की महत्वाकांक्षी योजना है। लगभग 27 हजार करोड़ रुपये के निवेश वाले इस प्रोजेक्ट से गुजरात की अर्थव्यवस्था, रोजगार, निर्यात और औद्योगिक विकास को नई गति मिलने की उम्मीद है।गुजरात पहले से ही भारत का सबसे लंबा समुद्री तट रखने वाला राज्य है। लगभग 2340 किलोमीटर लंबी तटरेखा, आधुनिक बंदरगाहों का मजबूत नेटवर्क, विकसित औद्योगिक आधार और व्यापार के अनुकूल वातावरण ने इसे देश के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री राज्यों में शामिल किया है। यही कारण है कि जहाज निर्माण उद्योग के विस्तार के लिए गुजरात को सबसे उपयुक्त स्थान माना जा रहा है। नई नीति इसी प्राकृतिक और औद्योगिक क्षमता का लाभ उठाने का प्रयास है। इस नीति के तहत पोरबंदर जिले के कुछडी क्षेत्र में एक मेगा ग्रीनफील्ड शिपबिल्डिंग क्लस्टर विकसित किया जाएगा। इस परियोजना को केंद्र सरकार की मंजूरी मिल चुकी है। कुल 27 हजार करोड़ रुपये के निवेश में लगभग 23,700 करोड़ रुपये निजी निवेश के रूप में आएंगे, जबकि लगभग 3,300 करोड़ रुपये साझा समुद्री और भूमि आधारित आधारभूत ढांचे के विकास पर खर्च किए जाएंगे। केंद्र और राज्य सरकार दोनों इस परियोजना को वित्तीय सहयोग प्रदान करेंगे। यह निवेश केवल बड़े उद्योगों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसके आसपास अनेक सहायक उद्योगों और सेवा क्षेत्रों का भी विकास होगा।इस परियोजना की सबसे बड़ी विशेषता दो इंटीग्रेटेड मेगा शिपबिल्डिंग पार्कों का निर्माण है। इन पार्कों में अत्याधुनिक शिपयार्ड, मरीन उपकरण निर्माण इकाइयां, परीक्षण केंद्र, अनुसंधान संस्थान, लॉजिस्टिक्स सुविधाएं तथा कौशल विकास केंद्र स्थापित किए जाएंगे। इससे जहाज निर्माण की पूरी प्रक्रिया एक ही स्थान पर उपलब्ध होगी और उद्योगों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। इससे उत्पादन लागत कम होगी, समय की बचत होगी और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता भी बढ़ेगी। नई नीति का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य राज्य की जहाज निर्माण क्षमता को बढ़ाकर 50 लाख डेडवेट टनेज से अधिक करना है। वर्तमान समय में वैश्विक व्यापार का अधिकांश हिस्सा समुद्री मार्ग से होता है। जहाजों की बढ़ती मांग को देखते हुए यदि भारत अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाता है तो विदेशी जहाजों पर निर्भरता कम होगी और निर्यात के नए अवसर भी पैदा होंगे। गुजरात इस दिशा में देश का अग्रणी राज्य बनने की क्षमता रखता है। इस परियोजना का सबसे बड़ा लाभ रोजगार के रूप में सामने आएगा। सरकार का लक्ष्य पांच लाख से अधिक युवाओं को कौशल विकास और क्षमता निर्माण का प्रशिक्षण देना है। जहाज निर्माण एक ऐसा उद्योग है जिसमें इंजीनियर, तकनीशियन, वेल्डर, मशीन ऑपरेटर, डिजाइन विशेषज्ञ, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, समुद्री सुरक्षा विशेषज्ञ और प्रबंधन से जुड़े हजारों पेशेवरों की आवश्यकता होती है। इसके साथ-साथ परिवहन, होटल, व्यापार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सेवा क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। इसका सीधा लाभ स्थानीय युवाओं और छोटे व्यवसायों को मिलेगा। गुजरात मैरीटाइम बोर्ड इस परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कर रहा है। इसमें विश्वस्तरीय आधारभूत सुविधाओं के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। ब्रेकवाटर, फ्लोटिंग क्रेन, हेवी लिफ्ट जहाज, ड्रेजिंग, हार्बर बेसिन, नेविगेशन चैनल, सड़क संपर्क, बिजली, जलापूर्ति और आधुनिक संचार व्यवस्था जैसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी। यह आधारभूत ढांचा भविष्य की औद्योगिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया जाएगा, जिससे लंबे समय तक उद्योगों को लाभ मिल सके।सरकार ने निवेशकों को आकर्षित करने के लिए अनेक वित्तीय और गैर-वित्तीय प्रोत्साहनों की भी घोषणा की है। पूंजी सहायता, स्टांप शुल्क में छूट, ब्याज सब्सिडी, ड्रेजिंग सहायता, बिजली और जल शुल्क में रियायत, एमएसएमई से खरीद पर प्रोत्साहन तथा समय पर परियोजना शुरू करने वाले निवेशकों के लिए अतिरिक्त लाभ जैसी व्यवस्थाएं उद्योगों को निवेश के लिए प्रेरित करेंगी। इसके अलावा सिंगल विंडो क्लियरेंस प्रणाली और समर्पित शिकायत निवारण तंत्र के माध्यम से प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाया जाएगा। इससे परियोजनाओं में अनावश्यक देरी कम होगी और उद्योगों का विश्वास बढ़ेगा। यह नीति केवल बड़े उद्योगों तक सीमित नहीं है बल्कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के लिए भी नए अवसर लेकर आएगी। जहाज निर्माण उद्योग में हजारों छोटे-छोटे पुर्जो और उपकरणों की आवश्यकता होती है। यदि स्थानीय एमएसएमई इन उत्पादों का निर्माण करेंगे तो उन्हें स्थायी बाजार मिलेगा। इससे स्थानीय उद्योगों का विस्तार होगा और राज्य की औद्योगिक अर्थव्यवस्था और अधिक मजबूत बनेगी। वैश्विक स्तर पर देखें तो चीन, दक्षिण कोरिया और जापान जहाज निर्माण उद्योग में अग्रणी देश हैं। भारत की हिस्सेदारी अभी अपेक्षाकृत कम है। यदि गुजरात में प्रस्तावित परियोजनाएं समय पर पूरी होती हैं और आधुनिक तकनीक के साथ उत्पादन शुरू होता है तो भारत भी इस क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा सकता है। इससे विदेशी मुद्रा अर्जित करने, निर्यात बढ़ाने और वैश्विक निवेश आकर्षित करने में सहायता मिलेगी। हालांकि इतनी बड़ी परियोजना के सामने कुछ चुनौतियां भी होंगी। पर्यावरण संरक्षण, समुद्री जैव विविधता की सुरक्षा, तटीय क्षेत्रों का संतुलित विकास और स्थानीय समुदायों के हितों की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक होगा। जहाज निर्माण उद्योग में आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षित मानव संसाधन की भी बड़ी आवश्यकता होती है। यदि इन पहलुओं पर पर्याप्त ध्यान दिया गया तो परियोजना का विकास अधिक टिकाऊ और सफल होगा।

भारत में बड़ी संख्या में इंजीनियर, प्रोफेशनल और ग्रेजुएट तैयार होने व रोजगार उपलब्धि में भारी गैप

वैश्विक स्तरपर वर्ष 2026 में भारत एक ऐसे ऐतिहासिक परिवर्तनकाल से गुजर रहा है,जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन, रोबोटिक्स, डिजिटल अर्थव्यवस्था,साइबर सुरक्षा,हरित प्रौद्योगिकी और डेटा- आधारित शासन ने शिक्षा,रोजगार, उद्योग तथा प्रशासन की पारंपरिक संरचनाओं को तेजी से बदलना शुरू कर दिया है।आज देश और विश्व में बड़ी संख्या में इंजीनियर, वकील, डॉक्टर,प्रबंधन विशेषज्ञ, तकनीकी पेशेवर तथा विभिन्न विषयों के स्नातक तैयार हो रहे हैं,लेकिन मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि डिग्री प्राप्त करने और रोजगार के लिए वास्तव में सक्षम बनने के बीच एक गंभीर अंतर दिखाई देता है। अनेक युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उद्योग की अपेक्षाओं के अनुरूप व्यावहारिक कौशल,तकनीकी दक्षता, समस्या- समाधान क्षमता,संवाद- कौशल टीमवर्क, डिजिटल समझ तथा बदलती तकनीक के साथ स्वयं को निरंतर अद्यतन करने की क्षमता में पीछे रह जाते हैं। दूसरी ओर उद्योग जगत को प्रशिक्षित और कार्य के लिए तैयार युवा नहीं मिलते। यही स्थिति शिक्षा और रोजगार के बीच नहीं, बल्कि डिग्री और दक्षता, ज्ञान और प्रयोग, युवा आकांक्षा और संस्थागत क्षमता तथा सरकारी नीति और जमीनी परिणाम के बीच मौजूद व्यापक अंतर को दर्शाती है। इसी पृष्ठभूमि में 28 जुलाई 2026 को भारतीय पीएम द्वारा केंद्र सरकार के सचिवों के साथ दूसरी उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता विशेष महत्व रखती है। बैठक में वित्त एवं अर्थव्यवस्था, वाणिज्य एवं उद्योग तथा प्रौद्योगिकी से जुड़े मंत्रालयों और विभागों की भविष्य की कार्ययोजना पर विचार किया गया। प्रधानमंत्री ने सरकारी व्यवस्था में विभागीय स्तर पर मौजूद क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर बाधाओं को कम करने, बेहतर समन्वय स्थापित करने तथा शासन को अधिक युवा, गतिशील नवाचारी और भविष्य के अनुरूप बनाने पर बल दिया। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि सरकार को बदलती चुनौतियों और नए अवसरों के अनुसार निरंतर स्वयं को विकसित करना चाहिए।यह संदेश केवल प्रशासनिक सुधार का सामान्य विचार नहीं है, बल्कि तेजी से बदलती अर्थव्यवस्था और युवा अपेक्षाओं के बीच शासन की नई भूमिका का संकेत है।

साथियों, 28 जुलाई 2026 की उच्चस्तरीय बैठक,उद्योग और शिक्षा के बीच कौशल- अंतर इंटर्नशिप की आवश्यकता एआई युग की नई रोजगार चुनौतियां, परीक्षा- पेपर लीक के विरुद्ध युवा आंदोलन, डिजिटल लोकतंत्र का विस्तार और प्रशासन को युवा, गतिशील तथा अनुकूलनशील बनाने की आवश्यकता ये सभी अलग- अलग विषय नहीं हैं। ये भारत के भविष्य के एक ही बड़े प्रश्न के विभिन्न आयाम हैं क्या देश की शिक्षा, अर्थव्यवस्था और शासन व्यवस्था युवा पीढ़ी की बदलती आकांक्षाओं के अनुरूप स्वयं को समय पर बदल पाएगी? भारत के युवाओं ने स्पष्ट संकेत दिया है कि वे केवल रोजगार नहीं, बल्कि निष्पक्ष अवसर चाहते हैं; केवल डिग्री नहीं, बल्कि उपयोगी कौशल चाहते हैं; केवल डिजिटल सुविधा नहीं, बल्कि डिजिटल अधिकार और पारदर्शिता चाहते हैं; केवल आश्वासन नहीं, बल्कि समयबद्ध परिणाम चाहते हैं। सरकार के सामने चुनौती केवल अधिक योजनाएं बनाने की नहीं, बल्कि योजनाओं को परिणामों से जोड़ने की है। यदि शिक्षा उद्योग से जुड़े, इंटर्नशिप वास्तविक अनुभव दे, कौशल भविष्य की अर्थव्यवस्था के अनुरूप हों, परीक्षा प्रणाली विश्वसनीय बने, प्रशासन संवादशील हो और युवाओं को नीति-निर्माण में भागीदारी मिले, तो भारत की युवा शक्ति विश्व की सबसे बड़ी विकास- शक्ति बन सकती है।

साथियों,आज विश्व की अर्थव्यवस्था केवल श्रम- आधारित नहीं,बल्कि ज्ञान,डेटा,नवाचार और कौशल- आधारित अर्थव्यवस्था बन रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कई कार्यों को तेज, स्वचालित और अधिक सटीक बना रही है।इंजीनियरिंग में डिजाइन, कोडिंग,परीक्षण और उत्पादन की प्रक्रियाएं बदल रही हैं; कानून के क्षेत्र में कानूनी शोध, दस्तावेजों का विश्लेषण और न्यायिक डेटा का उपयोग तकनीक से प्रभावित हो रहा है; चिकित्सा में निदान- सहायता डिजिटल स्वास्थ्य और व्यक्तिगत उपचार के नए मॉडल विकसित हो रहे हैं; बैंकिंग में एल्गोरिदम,फिनटेक और साइबर सुरक्षा का महत्व बढ़ रहा है। इसलिए भविष्य में केवल किसी विषय की डिग्री पर्याप्त नहीं होगी। युवा को अपने मूल विषय के साथ डिजिटल साक्षरता, एआई की समझ, डेटा विश्लेषण, नैतिक निर्णय क्षमता, रचनात्मकता और मानव-केंद्रित समस्या- समाधान की दक्षता भी सटीकता से विकसित करनी होगी।

साथियों, भारत में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में इंजीनियर तैयार होने के बावजूद रोजगार की उपलब्धता और कौशल की मांग के बीच अंतर पर लगातार चर्चा होती रही है। एक अध्ययन में भारत में प्रतिवर्ष लगभग नौ लाख इंजीनियर तैयार होने और तकनीकी क्षेत्र में रोजगार- वृद्धि की तुलना में स्नातकों की संख्या अधिक होने का प्रश्न उठाया गया है। अध्ययन ने यह भी संकेत दिया कि केवल पारंपरिक नौकरी- आधारित मॉडल पर्याप्त नहीं हो सकता और तकनीकी शिक्षा को उद्यमिता स्थानीय नवाचार तथा नए प्रकार के सूक्ष्म उद्यमों से जोड़ने की आवश्यकता है।हालांकि ऐसे आंकड़ों को विभिन्न संस्थानों और क्षेत्रों की अलग- अलग परिस्थितियों के अनुसार समझना चाहिए, लेकिन मूल चुनौती स्पष्ट है उच्च शिक्षा की संख्या बढ़ना अपने आप में रोजगार- योग्यता की गारंटी नहीं है।यही कारण है कि पीएम द्वारा उद्योग जगत के सहयोग से नए और कौशल- आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने की आवश्यकता पर दिया गया जोर अत्यंत प्रासंगिक है। शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम कई बार उद्योग की बदलती आवश्यकताओं की तुलना में धीमी गति से बदलते हैं। जब तक विश्वविद्यालय किसी नई तकनीक को पाठ्यक्रम में शामिल करते हैं, तब तक उद्योग अगले स्तर की तकनीक अपनाना शुरू कर देता है। इसलिए पाठ्यक्रम निर्माण केवल विश्वविद्यालयों या नियामक संस्थाओं का विषय नहीं रह सकता। उद्योग, शिक्षा संस्थान, शोध संगठन, स्टार्टअप, स्थानीय प्रशासन और युवाओं को मिलकर भविष्य के कौशल की रूपरेखा तैयार करनी होगी। 2025 की सरकारी समीक्षा के अनुसार कौशल विकास कार्यक्रमों में एआई, इंडस्ट्री 4.0, हरित रोजगार और डिजिटल सेवाओं जैसे उभरते क्षेत्रों के लिए विशेष पाठ्यक्रम तथा नई भूमिका- आधारित प्रशिक्षण संरचनाएं विकसित की गई हैं।